सरस्वती महिला महाविद्यालय,पलवल

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित

(उच्चतर शिक्षा विभाग,पंचकुला द्वारा प्रायोजित)

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषयः— समकालीन साहित्य के विविध विमर्श

(9 मार्च, 2024)

आमंत्रित अतिथि एंव वक्तागण

प्रो0 (डॉ0) माया मलिक
सेवानिवृत्त हिन्दी विभागाध्यक्ष
महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय,
रोहतक

प्रो0 (डॉ0) नवीन चंद्र लोहनी
हिन्दी विभागाध्यक्ष
चौ0 चरणसिंह विश्वविद्यालय
मेरठ

प्रो0 (डॉ0) पूरनचंद टंडन
वरिष्ठ प्रो0 हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

डॉ0 केशवदत्त शर्मा
एसो प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जी0जी0डी0एस0डी0 कॉलेज
पलवल

सरस्वती महिला महाविद्यालय ,पलवल

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित
(उच्चतर शिक्षा विभाग , पंचकुला द्वारा प्रायोजित)
एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी
(9 मार्च, 2024)

विषयः– समकालीन साहित्य के विविध विमर्श

समय एंव स्थानः प्रातः10 बजे ,संगोष्ठी कक्ष,
सरस्वती महिला महाविद्यालय ,पलवल

मुख्य संरक्षक
श्री अतुल मंगला (प्रधान)
अतिरिक्त महाधिवक्ता,
हरियाणा

संरक्षक
प्रो0 (डॉ0) वदंना त्यागी (प्राचार्या)
सरस्वती महिला महाविद्यालय
पलवल

संगोष्ठी संयोजक
श्रीमती अनिता देवी
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग,
सरस्वती महिला महाविद्यालय

संगोष्ठी सह–संयोजक
श्रीमती देविका शर्मा हिन्दी प्रवक्ता
सरस्वती महिला महाविद्यालय
पलवल

आयोजन समिति

1. डॉ0 अनिता कौशिक
2. डॉ0 प्रोमिला भारद्वाज
3. श्रीमती मिथलेश गुप्ता

4. डॉ0 आशा दहिया
5. डॉ0 सविता मनचन्दा
6. डॉ0 लक्ष्मी गुप्ता
7. डॉ0 रानी देवी
8. डॉ0 सोनिया भारद्वाज
9. श्रीमती अमृता अग्रवाल
10. डॉ0 आरती दीवान
11. श्रीमती शुभ्रा

परामर्श समिति

डॉ0 केशवदत्त शर्मा
डॉ0 अमृता श्री
डॉ0 सुमन भाटी

श्रीमती वंदना

तकनीकी सहयोग समिति

श्रीमती आरती शर्मा
श्रीमती पारूला
श्रीमती भावना

शोध पत्र

विषय से सबंधित किसी भी बिंदु पर अपने शोधपत्र का सार (Abstract) दिनांक 25 फरवरी,2024 तक hindidepartmentsmm@gmail.com पर अपना शोध सारांश 250–300 शब्दों का प्रेषित करें एवं शोधपत्र की हार्ड कॉपी सेमिनार स्थल पर जमा करवायें। एवं शोधपत्र 2500 शब्दों का होना चाहिए। लेख हिन्दी भाषा व केवल यूनिकोड में स्वीकृत होंगें।

पंजीकरण शुल्क

प्राध्यापक/संस्थान एवं संगठन प्रतिनिधि–500रू
शोधार्थी–300रू विद्यार्थी–200रू0
Paytm/Phone Pay करने
के लिए बार कोड–

पंजीकरण गूगल लिंकः– **https://forms.gle/cmnCUq2nSuVyRtia7**
वह्टसाऐप ग्रुप लिंकः– **https://chat.whatsapp.com/Ddsixb0QwVdBmdDJhOsZTP**

संपर्क सूत्र

श्रीमती अनिता देवीः– 8920794469
श्रीमती देविका शर्माः– 8168359510
डॉ0 अमरवतीः– 8053288180

प्रस्तावनाः

समकालीन शब्द का कोशगत अर्थ एक ही समय का, अपने समय का या समवयस्क होता हैं। इसका अर्थ है जो एक समय में हो समकालीन रचनाकार एक ऐसे वातावरण में जी रहा है। जहॉ यथार्थ को समग्र रूप मे देखने के बजाय टुकडों में देखने का प्रचलन है। युगों तक हाशिए पर रहने के लिए विवश विविध समुदाय आज अपनी अस्मिता रेखाकिंत कर रहे हैं। जिससे से विविध विमर्श सामने आए हैं। इस संदर्भ में डॉ0 प्रतिभा मुदालियर (मैसूर) ने कहा कि "समकालीन हिन्दी कविता में मानवाधिकारों से वंचित वर्ग ने अपनी अस्मिता कायम करने लिए अभिव्यक्ति का शस्त्र अपनाया। हिन्दी दलित विमर्श ने एक मुकाम हासिल किया है। समकालीन साहित्य की एक विशेषता यह थी कि कई कहानियॉ वास्तविकता पर आधारित थीं और विश्वसनीय कथानक था। पहले दो दशकों के दौरान, समकालीन साहित्य ने आधुनिकता के साथ रिक्त स्थान सांझा किए, कुछ विशेषताओ को बनाए रखा जैसे कि उदाहरण के लिए कथानक के बजाए पात्रो पर ध्यान केन्द्रित करना। साहित्य को अंधेरा चीरने वाला प्रकाश बताते हुए डॉ0 राग आहलाद चौधरी ने कहा कि " आज प्रतिकूल परिस्थितियों के समक्ष भारतीय साहित्य में इतिहास ,दर्शन और पंरपरा का सगंम होता है। लेकिन आज के सहित्य मे यह संगम सिकुडता जा रहा है। समकालीन सहित्य के सामने एक और खतरा है। अभिव्यक्ति का खतरा। गंभीरता और जिम्मेदारी पर आज प्रश्न चिहन लग रहा हैं क्योंकि सही मायने में साहित्य के अंतर्गत लोकतंत्र का विस्तार नही हो रहा हैं। हाशियाकृत समाजो को केन्द्र में लाना भी आज के साहित्य के समक्ष चुनौती का कार्य है। आलोचना के अंतर्गत भी गुटबाजी चल रही है। आलोचना पद्वति के
मानदंड को बदलना आवश्यक है। सौंदर्य और प्रेम साहित्य के बुनियाद है। साहित्य को प्रवृत्तिमूलक दृष्टिकोण से देखना अनुचित है। जब तक उसके स्त्रोत तक नही पहुंचेगे तब तक सिर्फ प्रवृत्ति के आगे चक्कर लगाते ही रहेंगे। समकालीन साहित्य या समकालीन आंदोलन में सभी साहित्यिक अभिव्यक्तियॉ शामिल हैं जो उत्तर आधुनिकता के बाद से हुई है। यह एक अवधि द्वारा परिभाषित किया गया है लेकिन इसकी विशेष शैली द्वारा भी 1940 के दशक में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अधिकांश विद्वान समकालीन साहित्य का उत्पादन करते हैं समकालीन साहित्य में विखंडन, अविश्वसनीय कथन,शैली (शैलियों और लेखको की नकल) बदलते कथन और गैररेखीय प्रस्तुति और नाटक और भाष में अनिश्चितता की विशेषता है। कुछ लेखकों को समकालीन माना जा सकता है यदि यह वर्तमान समय की शैलीगत,कलात्मक विषयगतगुणो को सांझा करता है। इस अवधारणा के तहत,अन्य शताब्दियो के कुछ लेखक भी समकालीन लगते है। समकालीन साहित्य का अधिकांश भाग पश्चिमी लेखकों से आता है। हालांकि यह शब्द यूरोपीय या अमेरिका साहित्य के लिए विशिष्ट नही है। वास्तव में वैश्वीकरण ने हमें मध्य पूर्व अफ्रीका और एशिया में कई साहित्याकारों द्वारा लिखे गए समकालीन कार्यो की सराहना करने की अनुमति दी है। उपन्यास और कविता के अलावा,यह साहित्य शैली कई प्रकार की शैलियों को शामिल करती है। जैसे कि पारम्परिक कल्पना और अन्य रूप नई वास्तविकता के लिए अनुकूलित है।

उपनिषयः–

1. समकालीन साहित्य में नारी चिन्तन।
2. आदिवासी दशा का समकालीन साहित्य में वर्णन।
3. दलित साहित्य विमर्श।
4. पर्यावरण एक समकालीन समस्या।
5. समकालीन साहित्य में सांस्कृतिक चेतना।

उद्देश्यः–

1. समकालीन सन्दर्भों परिस्थितियों तथा प्रवृत्तियो के विश्लेषण की समझ विकसित होगी।
2. समकालीन कवियों और कृत्तियो को समझने की क्षमता निर्माण होगी।

सरस्वती महिला महाविद्यालय,पलवल।

सरस्वती महिला महाविद्यालय,पलवल हरियाणा की एक अग्रणी शैक्षणिक संस्थान है और जिला पलवल का सबसे बडा कॉलेज है। कॉलेज की स्थापना 1988 मे मानविकी, वाणिज्य, और विज्ञान मे गुणवतापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। एक छोटे से पौधे के रूप में अपनी स्थापना से ही इस संस्थान ने तेजी से प्रगति की है और अब एक विशाल वट वृक्ष बन गया है। कॉलेज मे विभिन्न अनुशासनो के लिए अलग–अलग ब्लॉक शामिल हैं, जो वाई–फाई कनेक्टिविटी आधुनिक प्रायोगशालाओ,स्मार्ट कक्षाओ से सुसज्जित है। महाविद्यायल के निर्माणाधीन भवन मे सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध कराए जाने की संभावना है। महाविद्यालय मे वर्तमान मे 26 कोर्स संचालित है तथा लगभग 3000 छात्राएँ शिक्षा प्राप्त कर रही है। संस्थान को अपने प्रतिष्ठित पूर्व छात्रो पर गर्व है शैक्षणिक राजनीति ,सांस्कृतिक, खेल, रंगमंच, व्यवसाय आदि क्षेत्रो मे अपने श्रेष्ट परिणामो के कारण हरियाणा राज्य के सभी महाविद्यालयो मे एक विशेष स्थान रखता है तथा एक समृद्ध लाइब्रेरी जिसमे लगभग 20,000 पुस्तके 13 अखबार ,25 जर्नल्स, 20 पत्रिकाएँ हैं। हम किसी भी सुविधा को अवसर मे बदलने में कोई कसर नही छोडते है। सार्थक शिक्षा के साथ–साथ पाठ्येतर गतिविधियो को प्रदान करने में भी कॉलेज आगे रहता है। कॉलेज नई शिक्षा नीति को अक्षर लागू करने के लिए कृतसंकल्प है।